आर्शिया रफ़ी

गुलिस्ताने अर्श

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Arshiya Rafi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-514-7

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: November 2025

गुलिस्ताने अर्श

इंतिसाब

बिस्मिल्लाह अलरहमान अररहीम

सल्लू अल्ल हबीबअल्लाहुम्मा सल्ली अला मुहम्मदिन वा अला आलि मुहम्मदिन व अ न ज़िल हुल मक़अदल मुक़र्रबा इन्दका यौमल क़ियामति".

अस्सलाम अलैकुम वा रहमतुल्लाह वाबरकातहु शुरू अल्लाह के नाम से

जो निहायत रहमत और बरकत वाला है

मैं आलिमा फाज़िला सईदा अर्शिया रफ़ी क़ादरी अपने कारीन से कुछ अर्ज़ करना चाहती हूं। मैं हकीम सैयद नबी अहमद उर्फ़ नज्म खैराबादी की पोती हूं। वैसे तो मैं 11 साल की उम्र से शेरो शायरी लिख रही हूं लेकिन मुझे कभी अपनी तहरीर आम करने का मौका नहीं मिला मगर आज मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ज़ल सें आज इस मुकाम पर हूं की मेरी काविश पाए तकमील की तरफ बजानिब मंज़िल है तो मैं ख़ाकसार इसकी निस्बत अल्लाह और उसके रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अहले बैत और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के बाद अपने वालीदैन और असातज़ा की तरफ करती हूं।

और मैं आपसे ये इल्तिजा करती हूं की आप सब मेरे वालीदैन और असातज़ा के हक में ये दुआ करें की मेरी काविश दो जहां में उनके लिए राहत का सामान बने। आमीन या रब्बुल आलमीन

दुआओं की दरख़ास्त
सईदा अर्शिया रफी क़ादरी

बिस्मिल्लाह अलरहमान अलरहीम

हम्द बारी ताला

मैं क्या बयाँ करूंगी

हम्द बारी ताला

कहां मेरी ज़ुबां ये

कहां वो अज़मत वाला

जिसने ख़लीले आतिश

को बहिश्त में था बदला

जिसने इस्माइल में

आदाबे फ़र्ज़न्दी डाला

जिसने ना छोड़ा तन्हा

युसूफ को भी कुएं में

यूनुस को जिसने मछली

के पेट में था पाला

जिसने बचाई तूफां में

थी नूह की कश्ती

मूसा को जिसने दरिया

में रास्ता था दे डाला

जिसके फज़ल से ईसा

ने मुर्दे किए थे ज़िंदा

जिसने अयूब को भी

था मुद्दतों सम्हाला

इसका करम जो हमको
उम्मत मोहम्मदी दी
अर्शिया बनाया हमको है
आला नसीबो वाला

नात

ज़िक्र सरकार हो तो जुबां महक उठे
मेरे आक़ा की शान निराली बहुत
जिसपे आक़ा की नज़रे करम हो गई
फिर हुए उसके दर के सवाली बहुत

कोई पूछे तो मुझसे कि क्या मिल गया
मैं कहूंगी कि सारा जहां मिल गया
जब से आक़ा से मुझको अक़िदत हुई
मेरी दुनिया हुई बेमिसाली बहुत

ऐ मलाइक तुम्हें भी तो तब नाज़ था
जब मिले थे तुमसे हबीबे ख़ुदा
फिर तो हूरों ने तारों का सदका किया
और हुई शब मिराज जमाली बहुत

मुझको बुलवाएं आक़ा मदीने में अब
ना वसीला है कोई ना कोई सबब

मेरे अंदर का बंजर भी गुलशन करें
कि अर्शिया में भी है क़हतसाली बहुत

नात

हो करम की नज़र
मेरे आक़ा इधर
तैबा बुला लो मुझे
तड़पता है दिल
प्यासी है नज़र
तैबा बुला लो मुझे

तू अलताफ़ कर दे
मुझे माफ़ कर दे
पसंद आऊं तुझको
वो औसाफ़ कर दे
मुझ पर भी रहमत
का इनकीशाफ़ कर दे
ख़ुदा की नज़र में भी
शफ़्फ़ाफ़ कर दे
मेरे दर्द दिल की
दवा हो अता
तैबा बुला लो मुझे

है प्यासी निगाहें
लबों पर है आहें
तू असबाब कर दे
हो हमवार राहें
दरे मुस्तफ़ा को
नज़र मे बसाएं
मदीने की गलियों
में फेरे लगाएं
मेरी रूह को हो
मयस्सर शिफ़ा
तैबा बुला लो मुझे

मुझे सिर्फ तुझ से
मोहब्बत है आक़ा
तुझी से ही मेरी
अक़िदत है आक़ा
मैं आऊं मदीना ये
हसरत है आक़ा
मेरे जिस्म-ओ-जां की
ये चाहत है आक़ा
अर्शिया के दिल को
सुकून दे ख़ुदा
तैबा बुला लो मुझे

नात

ज़माने भर की ठुकराई हुई हूं या रसूल अल्लाह
मेरे सारे रंजो ग़म मिटा दीजिए

मेरी रूह की मज़ीद अब तो तड़प है बढ़ गई अल्लाह
मेरे क़ल्बो नज़र को भी शिफ़ा दीजिए

इस दुनिया की तपिश से ख़ाक हूं मैं या नूर अल्लाह
मुझे भी अपने दामन की हवा दीजिए

इससे पहले कि मेरा वक़्त रुख़सत हो हबीब अल्लाह
मेरी आंखों की भी अब प्यास बुझा दीजिए

मुझे भी बक्शवा दीजिएगा महशर में शफ़ी अल्लाह
के अर्शिया को भी जामे क़ौसर पिला दीजिए

नात

मुझे ज़िन्दगी में नूर चाहिए
ज़िक्र मुस्तफ़ा का सुरूर चाहिए

नामें मोहम्मद का बोसा करूं मैं लुवाबे दहन में असर चाहिए

शजरो हजर चलते साथ में जिनके
बस उनके करम की नज़र चाहिए

वो जिनके लिए सर कटाते रहे सब
उनके कदमों में अपना सर चाहिए

मेरी अब कोई भी तमन्ना नहीं
अर्शिया को नबी का दर चाहिए

आशार

बंदे ख़ुदा ख़ुद में सजदों का शौक पाल
दिल की रज़ा ना हो तो होती नहीं नमाज़

नाअहलों जिनको कहते हो तुम आम बशर
उनके बग़ैर तो कलमा मुकम्मल नहीं होता
ना भेजता खुदा अगर रहमत लिल आलमीन को
तो बेटियों के लिए उनका घर ही मकतल होता

तेरी बारगाह में आऊं
मेरी जान पे बनी है
अब हाज़री का मुझको
शर्फ दे दे या रब

नहीं मालूम है मुझको
मैं ज़िंदा अब तक कैसे हूं
शायद आपके दीद की
तड़प मुझे मरने नहीं देती

हो करम मुझ पर खुदारा
करम हो या रसूल अल्लाह
फ़कत आपके दर की कशिश
अर्शिया को गिरने नहीं देती

दिल की गहराइयों से पुकारा है आपको
अब अपने दर की हाज़री अता कर दीजिए
वल्लाह मरीज़ इश्क हूं मैं या रसूल अल्लाह
अर्शिया के हर ज़ख्म की दवा कर दीजिए

नात

मैं मदीने में आऊं नंगे पांव चलकर
हुज़ूर आपका अगर इशारा हो जाए

यहां दो जहां हो कदमों में उसके
रूखे अनवर का जिसको नज़ारा हो जाए

मैं तड़पती हूं दीदारे मुस्तफा को
बुलंद काश मेरा सितारा हो जाए

मैं किसी और के दर पे जाऊं भला क्यों
मुझे ये अमल क्यों गवारा हो जाए

लहद के अंधेरे और विरानियों में
अर्शिया को आपका सहारा हो जाए

इल्म

इल्म एक उजली साफ़ सुथरी तलवार है जिस तलवार पर यकीनी और बे यकीनी के मुसाफिर या तो तलवार पर से चलकर कट के गिर जाते हैं या मंजिल मुराद पा लेते हैं.

नुक्ता इस कदर बारीक है कि पलक झपकने का सफ़र है. अगर यकीन मुकम्मल कामिल है तो मंजिल जल्द या देर से मिल ही जाती है.

अगर आंख में खून उतरा हुआ है तो आप बहक जाएंगे जानने के इस अमल में मुश्किल जानना और ये तय कर पाना कि कौन सा रास्ता किस तरफ जाता है.

अगर आपको यकीन नहीं तो आप खुद एक सवालिया निशान हैं. ऐसे में आपको बुलंद सहारो की ज़रूरत पेश आती है.

बात इतनी है कि आगाज़ में आपका सहारा कौन है- बढ़ा हुआ बेपनाह सच से भरपूर हौसला या फिर शक. बस एक आधी अधूरी सी बात इल्म के मुतलाशियों के लिए यहां पर कहती चलूंगी कि कायनात में जब इल्म के दरवाजे पर पहुंच कर दस्तक देंगे तो इसकी शुरुआत बिस्मिल्लाह अलरहमान अलरहीम से होगी.

और यहीं से कायनात में इल्म के दरवाजे खुलेंगे. बस ये समझ लीजिए कि ये एक ख़ज़ाने की कुंजी है और इस्म आज़म के साथ इल्म आज़म है और तमाम मुश्किलात का हल भी है.

ये तो हो गई इल्मे दीन की शुरुआती दौर पर गुफ़्तगु. अब आइये एक नए मौज़ु की तरफ. आज हम और आप ये सभी लोग जानते हैं कि हमारे माशरे में इल्म की बुनियादी ज़रूरत हमारी ज़हनी और रूहानी सतह मज़बूत करने के लिए अशद ज़रूरी है.

भले एक बार हमारी कोई और ज़रूरत को हम नजरअंदाज कर दें लेकिन हमें हमारी इल्मी ज़रूरत को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, फिर वो इल्मे दीन हो या इल्मे दुनिया. हमें मिलकर इल्म को बढ़ाने के लिए अपना तालीमी निज़ाम बेहतर करना चाहिए. हमको अपनी नस्लों के लिए विरासत में इल्म की दौलत छोड़कर जाना चाहिए. हमें उनके अंदर इल्म की तलब इस कदर जगाना चाहिए कि उनके लिए इल्म सीखने की तड़प बेदार हो जाए क्योंकि मालो दौलत ज़र ज़मीन वग़ैरा वक़्त के साथ ख़त्म हो जाती है लेकिन अगर आपके अंदर इल्म की दौलत है और आपने उस इल्म को लोगों में तक्सीम किया है तो भले आपसे जुड़ी हुई हर एक शय ख़त्म हो जाए लेकिन वो इल्म जो आपने लोगों को दिया है वह बाकी रहेगा और दूसरे लोगों में मुंन्तकिल होता रहेगा. इस तरह आप रहें ना रहें, आपका नाम हमेशा बाकी रहेगा.

इसलिए हमें अपनी नसलों के लिए विरासत में इल्म का तोहफ़ा छोड़कर जाना चाहिए. हमें अपना तालीमी निज़ाम मजबूत और बेहतर करनी चाहिए.

नात

मैं कौन सा विर्द या वज़ीफ़ा
करूं कि जो ये मुक़ाम आए

हुज़ूर आपकी बारगाह में
कभी तो मेरा भी नाम आए

मुझे मौत आए उस वक़्त आक़ा
मेरे दिल को भी जब आराम आए

नहीं रहेंगे ये लब भी तिशना
नज़र जो क़ौसर का जाम आए

मुझे यकीन है आएगा वो वक़्त
तैबा में मेरी जब शाम आए

मैं मांगती हूं बस ये दुआ में
की तैबा से अर्शिया का इनाम आए

क़ता

अपने दर की हाज़री अता कीजिए
या नबी ये ज़िन्दगी है वीरान बहुत
मेरे लिए ये नामुमकिनात में से है
मगर आपका इशारा हो तो आसान है बहुत

शायरी

अब मेरी ख़ताओं को बख्श दे या रब
मैं हूं सुकून कल्ब की तलाश में बहुत

मनकवत

ना दौलत ना शोहरत ना ज़र अता कर मौला
अब इस ज़मीन को नवाज़ फिर उमर मौला

हो रहा ज़ुल्मों तशद्दुद तेरे बंदों पर
फिर हो शमशीर ख़ालिद फातेह ख़ैबर मौला

कई मकतल है इस वक़्त रुए ज़मीन पर
काश आ जाएं हुसैन अब्बास और अली अकबर मौला

सिसक रही अर्द फिलिस्तीन कश्मीर की वादी या रब
फिर टूटे अयूबी कुफ़्फ़ारों पर क़हर बनकर मौला

दे रही कई नाहिद सदाएं तुझे या रब
अब हिंद में भेज बिन कासिम का लश्कर मौला

कर रहे हैं मिस मार कई अब्राह तेरी इबादतगाहो को
नाजिल हो फिर अबाबील मुंह में लेके कंकर मौला

सिर्फ ये तमन्ना है तेरी उम्मत का सर बुलंद हो ताअब्द
काश देख सके ये मौजज़ा अर्शिया की नज़र मौला

नज़्म

ना मकान चाहती है ना मकीन चाहती है
ना फ़लक़ चाहती है ना ज़मीन चाहती है
उठो अहले इमा सबको बता दो के
उम्मत मोहम्मद सिर्फ फलस्तीन चाहती है

बसर हों जिनके शामो सहर सजदों में
ये क़ौम आज भी ऐसी जबीन चाहती है
ना दौलत ना शोहरत की तमन्ना है मुझको
अर्शिया सिर्फ कोई सलाउद्दीन चाहती है

क़ता

हो तेरे करम की एक निगाह
तो मिल जाए मुज़दा उस सफर का
तेरी जालियों को एक बार छू लूं
हो ये असासा मेरे लिए उम्र भर का

सब्र

हमारी ज़िन्दगी में सब्र का होना इस कदर लाज़िम है ये हम सब जानते हैं लेकिन सब्र पर अमल पैरा होना अकसरियत के लिए मुश्किल तरीन हो जाता है.

अब आइये इस तरफ आते हैं कि सब्र के माने क्या है. सब्र अरबी ज़ुबान का लफ्ज़ है जिसका मतलब बंद करना या रोकना है.

इसको ऐसे देखते हैं कि जिस चीज़ को हम तकलीफदे समझते हैं उस पर सब्र करने का मुक़ाम क्या है

हज़रत अबू सइद खुदरी रज़ी अल्लाहु तला अन्हू फ़रमाते हैं कि मुसलमान को कोई रंज, कोई दुख, कोई फ़िक्र, कोई तकलीफ़, कोई ग़म और कोई अज़ीयत उस वक़्त तक नहीं पहुंचती यहां तक कांटा जो उसको चुभे अल्लाह ता’ला उसके सबब से उसके गुनाहों को माफ़ कर देता है

ये बुख़ारी मुस्लिम की मुत्ताफिक़ हदीस है. यानी हमें जो तकलीफ पहुंचे अल्लाह इसके एवज़ हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देता है.

इसलिए मोमिन को पहुंचने वाली तकलीफ़ दूसरे एतबार से राहत है क्योंकि हम में से कोई भी शख्स आख़िरत की तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकता. अगर दुनिया की थोड़ी सी तकलीफ़ से हमारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं तो ये अल्लाह का बहुत बड़ा करम है हम पर. हमें अपनी तकलीफ़ो पर सब्र करना चाहिए.

यानी बड़ी से बड़ी तकलीफ़ मुसीबत और बलाओं पर हमारे लबों पर शिकवा ना हो. हमें इस बात का कामिल यकीन होना चाहिए कि ज़रूर इन तकलीफ़ों के पीछे हमारे लिए कोई बेहतरी होगी क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हर काम में हिकमत पोशीदा होती है.

जिस बात का इदराक हमें उस वक़्त नहीं होता लेकिन गुजरते वक़्त के साथ हमें इसका इल्म हो जाता है कि जो कुछ हुआ इसमें हमारे लिए बेहतरी थी, अल्लाह हमें हमारे सब्र का अजर जल्द या देर से दे देता है

अल्लाह हर किसी को तकलीफ़ नहीं देता हमारे बहुत से भाई-बहन कहते हैं कि गैर मुस्लिम लोग बहुत आराम से रहते हैं सारी परेशानियां मुसीबतें सिर्फ मुसलमानो के लिए हैं.

यहां पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम इरशाद फरमाते हैं. और ये बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है अल्लाह जिस शख्स से भलाई का इरादा करता है उसे आज़माइश में मुब्तेला कर देता है, कभी माल की आज़माइश, कभी जान की आज़माइश, कभी औलाद की आज़माइश और कभी बीमारी की आज़माइश. इस आज़माइश में अल्लाह उसको ही गिरफ़तार करता है जिससे भलाई का इरादा फ़रमाता है.

और अगर हम इन आज़माइश पर सब्र करते हैं, अल्लाह से शिकवा नहीं करते, मातम नहीं करते और अल्लाह की रज़ा में राज़ी होते हैं

तो अल्लाह हमें इसका अजर दुनिया और आख़िरत में सुर्खरू करके दे देता है.

अब सब्र की किस्म की तरफ आते हैं

ओलमा एकराम ने सब्र की तक्सीम कुछ इस तरह की है

सब्र की बुनियादी तीन किस्में हैं

अव्वल अतात पर सब्र करना.

यानी अल्लाह ता'ला के जितने भी अहकामात हैं, उन पर अमल पैरा होना- जैसे रोज़े का हुकुम है. मई औऱ जून का रोज़ा हो, हलक प्यास से सूख रही हो लेकिन फिर भी रोज़ा रखना है या बहुत ज्यादा सर्दी हो और उस सर्दी में ठंडे पानी को छूने की तकलीफ पर सब्र करके वज़ु करना, ये अल्लाह की अताद के लिए सब्र करना है.

दोम मासियत से रुक जाना

किसी तरह की लज़्ज़त है लेकिन हराम शय

है तो उससे ख़ुद को बचाना कितना भी वो लज़्ज़त आपको अपनी तरफ खींचती हो लेकिन उसके लिए ख़ुद पर बंध बांधना मासियत से रुकना है.

सोम बलाओं पर सब्र करना.

अल्लाह की तरफ़ से आपके लिए कोई आज़माइश आए तो जैसे आपका माल किसी ने गसब कर लिया हो या फिर किसी वजह से

आपकी औलाद आपसे दूर हो गई हो या आपका कोई रिश्तेदार किसी बीमारी में मुब्तेला हो, इस पर वावैला ना किया जाए बल्कि इस पर सब्र करके अल्लाह की रज़ा में राज़ी रहना बलाओं पर सब्र है.

अब आइये सबरे जमील की तरफ़ आते हैं किसी ने हजरत बिशर अल हाफी से पूछा कि सबरे जमील क्या है. आपने फ़रमाया सबरे जमील उस शख्स को हासिल है जिसके दिल में पूरी बनी आदम के लिए कोई शिकवा ना हो.

यानी जिसका दिल लोगों के शिकवे और शिकायत से खाली हो जाए वो समझे कि अल्लाह ता'ला ने उसे सबरे जमील अता कर दिया है. अब आप सोचें हमारे दिलों में किस-किस तरह की लोगों से शिकायत होती है. अज़ीज़ो अकारिब से शिकायत, दोस्तों से शिकायत, पड़ोसियों से शिकायत, गर्ज़ की एक-दूसरे से शिकवे और शिकायत, फिर वो शिकायत ज़ुबान तक आती है और पीठ पीछे गीबत बन जाती है. इस तरह हमारी सारी ज़िन्दगी शिकवे-शिकायत और गीबत से इबारत है.

"इन्नाल्लाह मा साबरीन.

अल्लाह ता'ला का क़ुर्ब उनको हासिल है जो लोग सबरे जमील की दौलत से मालामाल होते हैं और जिनको सबरे जमील हासिल हो वो लोग मुसीबत में हों तो कोई उनको पहचान नहीं सकता. इस पर मुसीबत के आसार वाज़े नहीं होते.

यानी अल्लाह पर इतना कामिल यक़ीन होता है कि जो कुछ भी है अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह अपने बंदों के लिए बेहतर करता है. यकीनन हर मुश्किल के बाद आसानी है. अब आप देखें कि हम कहां पर हैं. अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ करें कि अल्लाह हमें हादसात के पहले दौर में ही सब्र करने की तौफ़ीक दे. अल्लाह हम सबको सबरे जमील अता कर दे.

आमीन या रब्बुल आलमीन.

नात

मेरे अंदर बहुत है अंधेरा
चराग रोशन करें या नबी

आपके विर्द में है सवेरा
तो दूरूद क्यों ना पढ़ें या नबी

है शफ़क़त आपकी साथ मेरे
तो क्यों किसी से डरें या नबी

उनके दर से है इज़्ज़त जहां में
काश वहीं हम मरें या नबी

अर्शिया पर भी नज़रें करम हो
जामे क़ौसर हम पियें या नबी

क़ता

मेरी परवाज़ ऊंची क्यों नहीं होगी जहां में
आपकी शफ़कत जब मेरे साथ है या रसूल अल्लाह
मुझे क्यों ज़ुल्मतों में रोशनी ना दिखे लोगों
जब मेरी अक़िदत आपके साथ है या रसूल अल्लाह

क़ता

अपने दिल की गहराइयों से पुकारा है आपको
अब तो अपने दर की हाज़री अता कर दें
वल्लाह मैं मरीज़े इश्क हूं या रसूल अल्लाह
अर्शिया के हर ज़ख्म की दवा कर दें

क़ता

मैं अपनी तवानाई कहीं और खर्च क्यों करूं
मुझ पर लाज़िम है मैं ज़िक्र मुस्तफा करूं
अर्शिया की बस एक तमन्ना है या रब
जब भी मरूं तो मैं मदीने में मरूं

शाने अबू बकर

है जिनका वजूद वफा का पैकर वो अबू बकर
है जिनकी रुह इश्क नबी से मोअततर वो अबू बकर
जिन्होंने वार दिया अपना सब कुछ राहें हक में
जो थे मुस्तफा के नूरे नज़र वो अबू बकर

शाने उमर

उठाएं जो नज़र थरथराए बशर
है उनके वजूद में जलाल इस कदर
कापे इब्लीस और कैसरो किसरा अगर
कोई कह दे अर्शिया आए आए उमर

शाने उस्मान

जिनको मुस्तफ़ा ने अपनी दो लख़्ते जिगर दिया
जिनकी पहचान थी सख़ावत और हया
जिनकी शहादत पर रोए अली हैं
वो काबिले रश्क उस्मान गनी हैं

शाने अली

मिज़ाने अमल में तेरा मवाज़ना किससे करे अर्शिया
तेरा ज़िक्र तेरी दीद तेरी हसरत भी मेरी जान इबादत है

तमन्ना

हक बंदगी मैं अदा करूं
हर वक़्त बस ये दुआ करूं

है नमाज़ इश्क वाजिब मुझ पर
फिर क्यों मैं उसको कज़ा करूं

जो अहद किया था आलमे अरवाह् में
इस वक़्त वो वादा वफ़ा करूं

ये दिल की है बस तलब मेरे
कभी दुनिया की न तमा करूं

या रब मेरी ये दुआ सुन ले
मैं नबी का ज़िक्र किया करूं

अर्शिया के लबों पर कलमा हो
जब दुनिया से अलविदा करूं

क़ता

कोई हाजत सताए तो पढ़ो दूरूद शरीफ़
कोई ग़म रुलाए तो पढ़ो दूरूद शरीफ़
मेरे आक़ा की मोहब्बत तो ज़िन्दगी संवार देती है
अर्शिया दुनिया भी छूट जाए तो पढ़ो दूरूद शरीफ़

अशआर

जिसकी हर उम्मीद तुझसे ही वाबस्ता हो तो फिर
नहीं चाहिए उसे कोई और सहारा या रसूल अल्लाह

अपने ख्वाबों की तकमील करना है अगर तो
अहले मशरिक तुझे नींद से जागना होगा

शाने हुसैन

कौन कहता है हुसैन मजबूर थे कर्बला में पानी के लिए
बस अहदे वफ़ा करना था वरना ज़म ज़म बहता उनके ख़ैमो में

हके बंदगी अदा करना है तो
सजदा हुसैन का याद रखना लोगों

लुटा के काफ़ीला कर्बला में पैग़ाम ये दिया हुसैन ने
कि बातिल के आगे सर कट तो सकता है लेकिन झुक नहीं सकता

बद बखतों इमाम हुसैन की शहादत को इक़्तेदार का नाम ना दो क्योंकि जो खुद जन्नत के सरदार हैं उन्हें किसी इक़्तेदार की क्या ज़रूरत

सलाम

आती है कर्बला से मुसलसल ये सदाएं
हुसैन इब्ने अली आपकी शुजात को सलाम

जिनके दर परमलायत भी झुक कर कहें
ए नवासे रसूल आपकी शहादत को सलाम

नेज़े की नोक पर भी सजदा अदा किया
ए मेरे प्यारे आपकी इबादत को सलाम

था खौफ़ यज़ीदी लश्कर की आंखों में आपका
वल्लाह आपकी शमशीर की अज़मत को सलाम

लुटा दिया कर्बला में अपने गुलशन का हर एक फूल
ज़हरा के लख्ते जिगर आपकी सख़ावत को सलाम

बाज़ू कटाके भी आपको सकीना का था ख़्याल
अब्बास आपकी हिम्मत और कुवत को सलाम

कहती थी दरिया फ़रात रो कर ये मुसलसल
कासिम अली अकबर आपकी ताक़त को सलाम

लरज़ा दिया यज़ीद को एक पल में शाम में
इमाम सज्जाद आपकी ख़िताबत को सलाम

डरते थे बातिल भी ख्वातीन अहले बैत से
हो ताअबद आपकी चादर की हुरमत को सलाम

है आज भी उम्मत को कर्बला का ग़म शदीद
करता है सारा आलम बहत्तर की इनायत को सलाम

मैं हुसैनी हूं ये नाज़ है मुझको अर्शिया
हो लबों पर आखरी सांस तक अहले बैते नबूवत को सलाम

शुक्र

शुक्र इस्लाम का एक बुनियादी तसव्वुर और जदीद जिंदगी में इसकी अहमियत.

तार्रुफ

शुक्र का लफ्ज़ अरबी ज़ुबान से है जिसके माने एहसान मंदी तशक्कूर अदा करना है.
इस्लाम में शुक्र सिर्फ एक रसमी जुमला अदा करने तक महदूद नहीं बल्कि ये एक वसी तसव्वुर है

जो इंसान के अपने ख़ालिक अपने साथी और इंसानों तमाम मखलुकात से ताल्लुक़ को मोहीत है. शुक्र दर हकीकत ईमान का तकाज़ा है और इसके बिना ईमान ना मुकम्मल है.

कुरान मजीद में शुक्र की अहमियत

अल्लाह ताला ने कुरान मजीद में मोतादिद मुक़ामात पर शुक्र की अहमियत को वाज़े फरमाया है.
सूरह इब्राहिम आयत 7 और जब तुम्हारे रब ने एलान फ़रमा दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज्यादा दूंगा और अगर तुम ना शुक्रि करोगे तो मेरा अज़ाब यकीनन सख्त है. इस आयत मुबारका में अल्लाह ताला ने शुक्र
और ना शुक्रि के नताइज को वाज़े फरमाया है
शुक्र करने वालों के लिए मज़ीद नेमतों का वादा है जबकि ना शुक्रि करने वालों के लिए सख़्त अज़ाब की ख़बर है.

शुक्र के तीन अरकान

ओलमां इकराम ने शुक्र की तीन बुनियादी किस्मे बयान की हैं.

कलबी शुक्र

दिल से नेमत का एतराफ़ करना और महसूस करना

लिसानी शुक्र

ज़ुबान से अल्लाह का शुक्र अदा करना

आज़ा का शुक्र

अपने आज़ा को अल्लाह की अतात के लिए इस्तेमाल करना. हज़रत शेख सादी रहमुल्ला फरमाते हैं शुक्र आंखों से ये है कि हराम नजरों से बचाओ, कानों से ये है कि हराम आवाज़ों से बचाव, हाथों से ये है कि हराम काम ना करो और पैरों से ये है कि हराम जगह पर ना जाओ.

नबी अकरम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम की सीरत में शुक्र. रसूल अल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम शुक्र गुज़ार बंदे थे. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करते थे. छींक आने पर अल्हम्दुलिल्लाह कहना, खाना खाने पर दुआएं शुक्र पढ़ना, सुबह शाम और हर नमाज़ के बाद अल्लाह का शुक्र अदा करना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुक्रगुज़ार होने की वाज़े मिसाले हैं.

जदीद दौर में शुक्र की अहमियत

आज के दौर में जब के इंसान माद्दी तरक्की के बावजूद ज़हनी दबाव डिप्रेशन और बेचैनी का शिकार है शुक्र का इस्लामी तसव्वुर इसका बेहतरीन इलाज है. जदीद तहकीक ने भी ये साबित किया है कि शुक्रगुज़ार लोग ज़्यादा सेहतमंद और खुशगवार जिंदगी गुज़ारते हैं

शुक्रगुज़ार बनने के अमली तरीके

हर सुबह उठते ही शुक्र अदा करें

आंख खुलते ही अल्लाह का शुक्र अदा करें कि आपको एक नई जिंदगी मिली

नेमतों की फेहरिस्त बनाएं

हर रोज पांच नई नेमतें लिखें जिनके आप शुक्रगुज़ार हैं.

दुआ में शुक्र को शामिल करें

हर दुआ में अल्लाह के शुक्र का एहतामाम करें.

दूसरों की मदद करें

अल्लाह की दी हुई नेमतों में से दूसरों को भी दें.

सब्र और शुक्र

मुश्किल हालात में सब्र के साथ शुक्र का दामन हाथ से ना छोड़े

नतीजा

शुक्र दर हकीकत ईमान की तकमील है. ये ना सिर्फ अल्लाह के साथ ताल्लुक को मजबूत करता है बल्कि इंसान की अपनी नफ़सियाती और जिस्मानी सेहत के लिए भी मुफीद है. शुक्रगुज़ार बंदा हमेशा अल्लाह ता’ला की रहमतों और बरकतों का मुस्तहक ठहरता है

अल्लाह ता’ला हम सबको हकिकी शुक्र गुज़ार बंदे बनने की तौफीक अदा करें. आमीन या रब्बुल आलमीन.

नात

नहीं होता है अब मेरा गुज़ारा या रसूल अल्लाह
बस इसलिए आपको मैंने पुकारा या रसूल अल्लाह

मैं हूं मजधार में सरकार मुझको थाम लीजिए आप
ना कश्ती है ना है पतवार मुझको थाम लीजिए आप
कहीं मेरा डूब ना जाए शिकारा या रसूल अल्लाह

मैं हूं तारीक राहों में ना दिल में कोई हसरत है
बस विरानी ही विरानी है और घेरे वहशत है
अर्शिया को बक्शवा दीजिए ख़ुदारा या रसूल अल्लाह

क़ता

दुरूद होगा सलाम होगा
यही वज़ीफा अब आम होगा
जिसकी ज़ुबान पे हो नामे मोहम्मद
अर्शिया वो कब नाकाम होगा

तलब

मेरे हमनवा मेरे साथ चल के सफ़र अभी तवील है
सिर्फ़ तू मताए हयात है मेरे पास इसकी दलील है

तेरे हिज्र में जो तड़प रही उसे अपने दीद का शर्फ़ दे
मैं तेरे दयार में आ सकूं नहीं इसकी कोई सबील है

मेरे रास्ते हमवार हो तू इसका कोई सबब बना

मैं वहां से होकर गुज़र सकूं मेरी राह में जो फ़सील है

मेरे नफ़्स का जो तज़किया मेरे पास ऐसा तबीब हो
मेरे मौला मुर्शिद मिले कोई मेरी रूह कब से अलील है

तेरे इश्क में हूं ख़ाकस्तर मैं ज़र्रे से बन जाऊं ज़र
वक़्त रुख़सत में तैबा में रहूं ये अर्शिया की तकमील है

सलाम

ऐ बादें सबा ऐ महकी फ़िज़ा
पैगाम मदीने ले जाना
हर वक़्त लबों पे है सल्ले अला
सलाम मदीने ले जाना

सब अदना है और आला वो
ज़ुल्मतों में हैं उजाला वो
उनकी यादों में जो गुज़रे
वो अय्याम मदीने ले जाना

है शफक़ की लाली गालों में
जामे क़ौसर नैन के प्यालो में
उनकी काली कमली के सदके
मेरा नाम मदीने ले जाना

आपके दीद की मैं प्यासी हूं
हो मुझ पे करम मैं आसी हूं
जो लफ़्ज़ों में मैंने पिरोया है
वो एहतराम मदीने ले जाना

सुनते हैं कि महशर में अर्शिया
रब जिनकी सुनेगा वो हैं मुस्तफा
फिर मुझको बनाकर शौक से तुम
ग़ुलाम मदीने ले जाना

मुनाजात

सिर्फ तेरा सहारा या अल्लाह
कोई नहीं हमारा या अल्लाह

ज़ुल्मतों ने हमको घेरा है
सुन ले तुझको पुकारा या अल्लाह

हो ज़ियारत तेरे घर की मुझे
हो तेरा एक इशारा या अल्लाह

अपनी रहमत तू कर दे सब पर
पार हो बेड़ा हमारा या अल्लाह

मुझ पे कर दे तू एक नज़र तो अगर

मुझको मिल जाए किनारा या अल्लाह

करके तैबा का तसव्वुर अर्शिया ने
वक़्त कांटों पे गुज़ारा या अल्लाह

नज़्म उनवान पर्दा

बेशक रिदा एक मोमिन लड़की की पहचान है
मगर ग़ाफ़िल तू इस बात से कितनी नादान है
तू लड़की है तुझे पर्दा यकीनी ज़ेब देता है
बराबरी के नाम पर तुझे ज़माना फरेब देता है
गुलशने आयशा है तू कनीज़े फातिमा है तू
तू इस्लाम की शहज़ादी नबी की ख़ादिमा है तू
हों जज़्बा शहादत तो सुमयया के करम पर हो
यज़ीदीयों के सामने ज़ैनब के नक्शेकदम पर हो
कभी बातिल जो टकराए तो खौला बन जाना
बात इस्मत पे आए तो अपनी मुहाफ़िज़ा बन जाना
तू सहमी तो तेरी हिफाज़त करने कौन आएगा
नहीं हैं मोहम्मद बिन क़ासिम जो उनका परचम लहराएगा

नज़्म उनवान माँ

माँ क़ल्ब और रूह की राहत है
माँ सांसों की ज़रूरत है

माँ के जज़्बे में शिद्दत है
माँ रूठे भी तो शफ़क़त है

माँ हर लम्हे की आदत है
माँ को देखना इबादत है

माँ की नज़रे सरापा मोहब्बत है
माँ का हर अंदाज़ चाहत है

माँ का लम्स पुरहिद्दत है
माँ दौलत शोहरत इज़्ज़त है

माँ से ही सबकी अज़मत है
माँ है तो बुलंद किस्मत है

माँ की दुआओं में हसरत है
माँ रब की एक इनायत है

माँ से जिसको आक़िदत है
माँ से रोशन उसकी आख़िरत है

माँ के वजूद की अहमियत है
माँ ना हो तो दुनिया में वैहशत है

माँ के कदमों में अर्शिया जन्नत है
माँ सबसे बड़ी हकीकत है

नज़्म उनवान वालिद

मुद्दत हुई वो सोया नही
वक़्त के हाथों हारा हुआ शख्स

ज़िन्दगी तूने कभी देखा है
अपनों के वसीले से मारा हुआ शख्स

इस तपती धूप में वो शजर सा है
खुद को मेहनत से वो निखारा हुआ शख्स

इस उम्र में भी जिसको सुकून नहीं मिलता
फिर भी हम सबका वो सहारा हुआ शख्स

काश अर्शिया उस पर हर सांस सदका कर सकती
मेरी अक़ीदतों का मरकज़ वो मेरी आंखों का तारा हुआ शख्स

नज़्म उनवान बेटी

मुझको पत्थर मत समझो
मैं माटी की एक गुड़िया हूं

बाबुल मेरे मैं तेरे आंगन की
एक चिड़िया हूं

मुझको सोने में मत तोलो
बस थोड़ी इज़्ज़त दे दो तुम

मैं तेरे दिल का टुकड़ा हूं
मैं तेरी सारी दुनिया हूं

मुझ से हंसकर कह दे तू
मैं तुझ पे अपनी जां वार दूं

माँ तेरे सर का ताज हूं मैं
और माथे की मैं बिंदिया हूं

नज़्म उनवान औरत

मैं वफ़ा परस्त हूं तो ग़म कुसार भी हूं
किसी की अदना सी ख्वाहिश
तो किसी कहानी का अहम किरदार भी हूं
मैं किसी के लिए बेअदब तो किसी की दादो तहसीन भी हूं
किसी का टूटा हुआ एतमाद तो किसी के नफ़्स की तस्कीन भी हूं
मैं मोहब्बत हूं तो खूबसूरत फ़रेब भी हूं
किसी पर ग़ालिब आ जाऊं तो आसेब भी हूं
मुझको नफ़्स की ज़रूरत समझने वाले
मैं अज़ल से तेरी रूह की राहत हूं
मैं औरत हूं मैं औरत हूं.

मैं चाहूं तो बहक जाए कोई सूफी भी
अगर चाहूं तो सुधर जाए कोई दीवाना
मैं चाहूं तो नसलों को तबाह भी कर दूं
और चाहूं तो बसा दूं किसी का भी आशियाना
मैं ज़माने में ज़र्रा भी हूं ज़र भी हूं
किसी के कदमों की हूं ख़ाक तो किसी के लिए गौहर भी हूं
हूं मैं मज़लूम कहीं पर तो कहीं बरतर भी हूं
है मुझ में खैर कहीं पर तो कहीं मैं शर भी हूं
मुझको सरेआम यूं रुसवा करने वाले
मैं तेरी क़ौम की बेटी तेरी इज़्ज़त हूं

मैं औरत हूं मैं औरत हूं

मैं वक़्त के हाथों लिखी तहरीर भी हूं
मैं किसी की अनचाही तकदीर भी हूं
मैंने सदियों से है खुद की तबाही देखी
जो कभी खत्म ना हो ऐसी गुलामी देखी
मेरे जज़्बे फ़क़त मेरे नहीं सबके हैं
कभी वालीदेन कभी शोहर तो कभी रब के हैं
मेरी नामोस को फ़रोक़्त करने वाले सुन
मैं तुझ पर खुदा की अज़ीम रहमत हूं
मैं औरत हूं मैं औरत हूं.

नज़्म उनवान ज़िन्दगी

ज़िन्दगी जहत
मुसलसल का नाम है
कभी कुछ मिला
कभी चला गया
कभी ज़िन्दगी से
हर गिला गया
कभी बहुत खूबसूरत
है सुबह शाम
कभी नहीं मिली
एक पल आराम
ज़िन्दगी को नहीं
कर सकते तसखीर
चाहे हाथ में हो उम्मीदों
का दिया या शमशीर
ये ज़िन्दगी उसी की है
जो राज़ी बिल रज़ा रहे
नहीं हक़ ताला से जफ़ा करे
मैंने समझी है ज़िन्दगी
की बस इतनी कहानी
नहीं करनी चाहिए

कभी कोई नादानी
हो भी जाए अगर
कभी कोई गुनाह
तो उसी वक़्त ले लेनी
चाहिए अल्लाह की पनाह
यही मेरा तजज़िया है
यही फ़लसफ़ाए अर्शिया है

नज़्म उनवान उर्दू

कौन मिटाएगा उर्दू को
उर्दू सब की शान है

उर्दू है हिंदी की बहना
हिंदी से हिंदुस्तान है

लोगों उर्दू शहद से मीठी
एक प्यारी ज़ुबान है

उसकी नअहली को क्या समझूं
जो कहता है उर्दू यहां मेहमान है

उर्दू जिसको नहीं आती है
वो इस पे पशेमान है

अर्शिया नाज़ हमको उर्दू पर
ये अदब की जान है

नज़्म उनवान हुसैनी

हम अहले दिल है अहले सूखन
हम बातिल से कब डरते हैं
हम हुसैनी हैं ये सुन लो सब
दुश्मन को मार के मरते हैं
सब याद करो तारीख़ अपनी
हमने क्या-क्या गवाँया है
फिर भी हाथों में देखो
इस्लाम का परचम लहराया है
हमने ही उंदलस के साहिल पर
कश्तियों को जलाया था
हर मोड़ पे दी थी कुर्बानी
नहीं की थी कभी कोई नादानी
हमने हिंद में भी आकर
खुद को सबसे मनवाया था
खिलौने होते हैं जब हाथों में
हमने तीरों को उठाया था
हम सहरा के फरेब में आते थे

फिर प्यासे ही मर जाते थे
ईमान की ताकत थी हममें
था सब्र हमारे हर ग़म में
है आज भी हिम्मत हम सब में
हम रोते हैं अक्सर शब में
हैं दीन की रौनक मुजाहिद हम
हैं आबिद और ज़ाहिद हम

नज़्म उनवान वतन से इश्क

मेरे पैरों में पायल नहीं बेड़ीयाँ डालो
मैं नहीं अपने इरादों से हटने वाली
हूं मैं खौला की जांनशीन ये बता दो सबको
हर मुहाज़ पर इस्तिकामत से डटने वाली
वतन से इश्क मेरे लहू की गर्दिश में है
अहले बातिल के ज़ुल्म से मैं नहीं डरने वाली

नज़्म उनवान वतन वालों

वतन वालों ना घबराना
हर रात के बाद सवेरा है

है गर्दिश में तारे तो क्या
हमें उम्मीदों ने भी घेरा है

सब मिलकर दुआ में फ़तेह मांगो
अभी दूर दुश्मन का डेरा है

ये हिंदुस्तान हमारा है
ना तेरा है ना मेरा है

हम जीत जाएंगे अर्शिया क्योंकि
हिन्द में ख़्वाजा का बसेरा है